'ग्राम्य जीवन' स्वरूप और विषेशता

डॉ. मंजूर सैय्यद[1], लिना भवसार[2]

[1]*शोधार्थी, हिंदी अनुसंधान केंद्र बिटको कॉलेज नाशिकरोड महाराष्ट्र*
[2]*शोधछात्रा*

ग्रामीण जीवन स्वरूप : भारत गॉवो का देश है। इसलिए इसकी मौलिक आत्मा नैसर्गिक सौंदर्य गॉवो में बिखरा पडा है। इसके सम्बन्धो का रूप अधिक निकट, प्रत्यक्ष और गहन है। फेचर चाईल्ड के अनुसार " ग्राम पडोस की अपेक्षा विस्तृत क्षेत्र है, जिसमें आमने सामने के सम्बन्ध पाए जाते है, जिसमें सामूहिक जीवन के लिए अधिकाशतः सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणीक, धार्मिक एवं अन्य सेवाओ की आवश्यकता होती है, जिसमें व्यवहारो के प्रति सामान्य सहमति होती है ?" भारत जीवन की धडकन और उसके दर्द को जानने के लिए हमे ग्राम्यजीवन की नसे टटोलनी पडती है। नाना प्रकार की समस्याओ से जूझना पडता है। नाना प्रकार की समस्याओं से जुझते अनेक तरह की कुप्रथाओं और रूडियों के निरर्थक बोझ को ढोते अज्ञान और अशिक्षा की शीत में ठिठुरते हुए भारतीय गॉव इस देश की जीवन करून कहानी कहते है। ग्रामीण क्षेत्रो के जीवन का स्वाभविक तथा सहज चित्रण ग्राम्यांचल के प्रति प्रेम उसके कथा साहित्य " जिस देश मे अस्सी फीसदी मनुश्य गॉवो में बसते हो, उस देश के साहित्य मे ग्राम्यजीवन ही प्रधान रूपसे चित्रीत होना स्वभाविक हैं। उन्ही का दुःख और उन्ही की समस्याएँ राष्ट्र की समस्याएँ हैं। भारत एक कृषि प्रधान देश है। यही की अधिकांश आबादी गॉवो में रहत है। गॉवो के अधिकतर लोग धरती पर खेती करके अपनी आजीविका चलाते है, वे प्रतिदिन प्रातःकाल जल्दी उठाकर खेतों में चले जाते है और अंधेरा होने तक दिन भर कडी धूप मे मेहनत करते है। हल चलाने, खेतो की मिट्टी ठीक करने, बीज बोने, खरपतवार हटाने, सिंचाई करने और फसल काटने मे ही उनका अधिकांश समय लग जाता है।

ग्राम शब्द व्यूत्पति :

1 पाणिनि 'ग्राम' को एक धातु ही स्वीकार करते है; जिसका अर्थ होता है आमंत्रण।

2 पाणिनि सुत्र :– ' ग्रामजन पदैक देषा अत्रठयो।' अर्थात किसी देष या प्रांत भाग से संबंधित वस्तु विषेश 'ग्राम'।

3 प्राचीन काल में प्राय ग्राम मे भिन्न जातिके लोग रहते थे , जो जतिगत पेषा करते थे। ग्राम के समीन की भूमि उपषल्य कहलाती थी।

4 धीरेन्द्रवर्मा ने 'ग्राम' के संबंध मे लिखा है ' ग्राम तो एक इकाई है, उनमे लोकमानस विदयमान रहता है।

ग्राम जीवन विषेशताएँ : 1 सरल और सीधा सादा जीवन – भारत के ग्रामीण बडा सीधा–सादा और सरल जीवन बिताते है। वे आमतौर से कच्चे मकान मे रहते हैं, जिन पर खपरैल और फूँस की छते होती है। उनमें प्रकाश ना हवा आने–जाने के लिए खिडकियों और रोषनदान प्रायः नही होते। किसान खुल और शुध्द वायु में सांस लेते है और सादा भोजन खाते है, जिससे उनका स्वास्थ ठीक रहता है और वे बलवान होते है। उनके परिवार कर्मठता और आपसी सहयोग का बडा सुन्दर उदाहरण पेश करते है। ग्रामीण महिलाएँ घर का समूचा काम करने के अलावा अपने पतियों की खेती के कामों में भी मदद करती हैं। अक्सर छोटे–छोटे बच्चे भी अपने मॉ–बाप के कामों में भरपूर योगदान देते है। समूचे परिवार को मिल–जुलकर काम करते देख बडी प्रसन्नता होती है।

2 ग्रामीण जीवन का आनन्द : गांववासी हर समय केवल काम में ही लगे रहते है और मनोरंजन के लिए उनके पास कोई समय नही होता। खेती का काम मौसमी होता है। साल मे तीन महीने तक खेत मे करने को कुछ नही रहता। इसके उलावा फसल काटते समय वे मिलजुलकर गाते नाचते और खुषियॉ मनाते है। खेतो मे जब काम नही होता तो आपस मे मिलकर वे तरह तरह के लोकनृत्यो मे भाग लेते है। दैनिक जीवन मे भी वे आनन्द के क्षण निकाल ही लेते है।

दोपहर मे पेडों की छाया में बैठे वे हुक्का गुडगुडाते है। या बीडी पीने का आनन्द लेते है। षाम को वे चौपाल पर इकटठे होकर एक दूसरे के सुख दुख का हाल जानते है। उन्हे जीवन में कोई विषेश चिन्ता नही सताती।

3 ग्रामीण जीवन अंन्धश्रध्दा : ग्रामीण जीवन का सबसे बडा अभिशाप वही व्याप्त निरक्षरता है। उनपढ होने के कारण वे चालाक लोगों के कहने मे आसानी से आ जाते है और अपना नुकसान कर बैठते है। वे अनेक रूढियो के शिकार रहते है। उनके अन्धविश्वास का लाभ अनेक ओझा, सयाने, और पण्डीत उठाते है। उनमें बालविवाह की प्रथा व्यापक रूप में फैली हुई है, जिसके कारण अनेक सामाजिक बुराइयॉ पैदा होती है।

ग्रामीण बीच विवाह, जनम, मृत्यु जैसे सामाजिक अवसरों पर अपनी सामर्थ्य से बढकर खर्च करने की प्रथा है। असके फलस्वरूप वे कर्ज के बोझ से दबे रहते है। गांवो मे छोटी–छोटी बातो को लेकर अकसर लडाई–झगडे होते है। और जरा–जरा सी बात पर कत्ल और खून जैसी वारदाते तो आम बाते है। भूमि संबंधी झगडो में लम्बी मुकदमेबाजी चलते है, जिसमे, उनकी गाढी कमाई का

एक बडा हिस्सा व्यर्थ से बरबाद हो जाता है। बहुत से ग्रामीण शराब, गांजा, भांग, चरस जैसे नशीले पदार्थी के आदी हो जाते है।

4 रीतिरीवाज – परम्पराएँ वे उपने रीती–रिवाजों और परम्पराओं पर जान छिडकते है उनमें जात–पात का विचार कूट–कूट कर भरा हुआ है। समग्र रूप मे ग्रामिण बडे सज्जन होते है। उनमें शिक्षा का प्रसार करके उनकी सभी बुराइयां आसानी से दूर की जा सकती हैं और ऐसा होने पर ग्रामीण जीवण स्वर्ग के समान बन जायेगा।

ग्राम को ' गॉव ' का जाता है। पूर्व की सभ्यता गॉवो की है और पश्चिम की सभ्यता नगरो की। कारण यह है कि पूर्व की प्राचीन सभ्यताओं में ग्राम और ग्रामीण धंदोका प्राधान्य रहा है। पूर्वी देष जैसे– भात, पाकिस्तान, बर्मा, चीन, ईरान, मलय अभी भी गॉवो के देश कहे जाते है। इन देशो की प्राय 80 प्रतिशत जनता गॉवो मे रहती है। और वहॉ नगरो की उन्नती विशेशकर पिछले 200 वर्शी में ही हुई है।

5 गॉवो के आपसी संबंध : सामाजिक संगठन और धर्म के क्षेत्र में गॉवो के आपसी संबंध प्रत्यक्ष और महत्वपूर्ण होते है। उत्तर भारत के अधिकतर गांवो में गांव के बाहर विवाह करने की प्रथा है। गॉव के एक वर्ण के लोग आपसमें एक दुसरे को रक्त संबंधी दायाद मानते है। धार्मिक विश्वास के मामले मे भी गॉव मे भेद पाए जाते है। उनके विश्वास और रीतियॉ उनके अपने ही होते है, जो कभी कभी धर्मग्रंथो मे वर्णित विश्वास और रीतियों से बहुत अलग होते है।

निश्कर्श – ग्राम जीवन उपर्युक्त स्वरूप विषेशाताओं से विवेचित है कि ग्राम का स्वरूप अनाधिकाल से भारत में हैं। वहां का समाज परम्परा से वैसे ही रहता है और रीवाजों का पालन करता है इसलियेऍ विकास से दुर है। किंतु वैश्विाकरण के युग मे ग्राम भि सम्मीलत है। आधुनिकता की अनेक सुधार– योजनाएँ ग्रामतक पहूँच रही है। इसलिए यह कहना अनिवार्य नही है कि भारत अब ग्रामों का देश है।

संदर्भ ग्रंथ

रामदरशमिश्र के कथा साहित्य में ग्राम्यजीवन पृश्ठ क्र. 9
भारत में ग्रामीण जीवन पर अनुच्छेद।
– आकाष षिंदे
आधुनिक हिन्दी कवियों की दृश्टि मे ग्राम्यजीवन
– डॉ. ममता सिंह